P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-III*November-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

भारत में लिंगानुपात का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (Census 1901 से 2011 तक)

टी. आर. रातरे
सहायक प्राध्यापक,
अर्थशास्त्र,
गुरुघासी दास यूनीवर्सिटी,
बिलासपुर।

सारांश

समाज विकसित अथवा अल्प विकसित कैसा भी हो, जनसंख्या का प्रश्न उसके लिए महत्वपूर्ण होता है । प्रायः सामाजिक एवं आर्थिक शोध में इस ओर काफी ध्यान दिया जाता है । जनसंख्या, भौगोलिक दशाओं के साथ–साथ सामाजिक उत्पादन का प्राकृतिक आधार होती है । किसी भी समाज में उत्पादक शक्तियों (Productive Forces) के दिये हुए स्तर पर जनसंख्या का आकार और गुणात्मक स्तर, सामाजिक सम्पत्ति की मात्रा और भावी विकास की संभावनाओं को निर्धारित करता है।[1]

मुख्य शब्दः भौगोलिक दशा, गुणात्मक स्तर, लिंगानुपात, राजनैतिक, जनसंख्या।

प्रस्तावना

विश्व की जनसंख्या 31 अक्टूबर 2011 को 7 अरब थी जिसमें भारत का 17.5% जनसंख्या निवासरत् है जबकि चीन के बाद भारत का दूसरा स्थान है। विश्व में भारत का भौगोलिक क्षेत्रफल 2.4% है। भारत का कुल जनसंख्या 1891 में 23.6 करोड़ था जो कि जनगणना वर्ष 2011 में बढ़कर 121.09 करोड़ हो गया।[2] भारत में लिंगानुपात में कुछ जनगणना वर्षो को छोड़कर प्रायः लिंगानुपात में लगातार गिरावट आयी है एवं विभिन्न राज्यों में लिंगानुपात में भी अंतर रही है। किन्तु महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विकास एवं संविधानिक अधिकारियों में वृद्धि के कारण विगत दशक में महिलाओं के लिंगानुपात में कुछ सुधार का संकेत दिखाई दे रहे है।

जनसंख्या के विकास में लिंगानुपात का विशेष महत्व होता है। लिंगानुपात के द्वारा न केवल जैविक, आर्थिक एवं सामाजिक प्रावृत्तियों का ज्ञान होता है, अपितु स्त्री और पुरूष का सामाजिक एवं आर्थिक कार्य एक–दूसरे के पूरक होता है जो कि सामाजिक विकास का सूचक है।

उद्देश्य

1. भारत में लिंगानुपात में लगातार आ रही गिरावट का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2. सभी राज्यों के लिंगानुपात का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध प्रविधि एवं सीमाएं

अनुसंधान एक ऐसा व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध व नियंत्रित अध्ययन है जिसके अंतर्गत संबंधित चरों व परिणामों के पारस्परिक संबंधों का अन्वेषण उपयुक्त सांख्यिकीय विधि तथा वैज्ञानिक विधि के द्वारा किया जाता हे तथा प्राप्त परिणामों से वैज्ञानिक निष्कर्षो तथा नियमों व सिद्धांतों की रचना, खोज व पुष्टि की जाती है।

आंकड़ो का संकलन

जनगणना 1901 से 2011 के जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं की आंकड़े एकत्रित कर शामिल किया गया है । प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयक समंको पर आधारित है।

अध्ययन शोध आंकड़ों के विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है जो इस प्रकार है :–

लिंगानुपात = (स्त्रियों की कुल संख्या/पुरूषों की कुल जनसंख्या) x 1000

उदाहरण

जनसंख्या 2011 के अनुसार (भारत की कुल जनसंख्या 1210193422)

पुरूष – 623724248

महिला – 586469174

लिंगानुपात = (586469174 /623724248) **X** 1000 = 940 (प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या)

लिंगानुपात वृद्धिदर – (प्रतिशत विधि द्वारा)

$$\text{Sex Ratio} = \frac{\text{Sex Ratio of the current year} - \text{sex ration of the previous year}}{\text{Sex Ratio of the previous year}} \times 100$$

$$= \frac{340 - 933}{933} \times 100$$

= 0.75%की वृद्धि हुई है।

सीमाए

प्रस्तुत अध्ययन में भारत में जनगणना 1901 से 2011 तक के कुल जनसंख्या, घनत्व, साक्षरता, जन्म दर एवं मृत्यु दर तथा विशेष कर लिंगानुपातों में परिवर्तनों का अध्ययन किया गया है।

शोध परिकल्पना (Hypothesis)

1. भारत के लिंगानुपात में विभिन्न जनगणना वर्षो में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।
2. भारत के राज्यों में लिंगानुपात में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन(Review of Literature)

पूर्व शोध सामग्री से जहां एक ओर अध्ययन में सरलता आ जाती है, वहीं इसका दूसरा लाभ शोधार्थी के स्तर का भी अनुमान लगाता है।

प्रस्तुत अध्ययन प्रबंध के उचित सम्पादन हेतु संबंधित पूर्व साहित्यों का अध्ययन किया जाता है जो निम्नांकित है

गुप्ता श्रीराम प्रताप ने भारतीय समाज समाज मासिक रचना में अध्ययन किया कि 31 जुलाई 2001 में पेज नं. 14 में प्रकाशित किया है इन्होंने बताया कि घटती मान्यताएं बढ़ती लिंग भेद समय के साथ–साथ देश में महिलाओं की विशेष कर छोटी बच्चियों का चिकित्सा, शिक्षा, पोषण आदि में भेदभाव की प्रवृत्ति में वृद्धि हो रही है।

राजपूत, डॉ.एस.व्ही.एस एवं हजारी, सिंह अक्षय ने ''घटते लिंगानुपात का व्यवहारिक पक्ष एवं समाज की भूमिका में अध्ययन किया एवं वर्ष 2003 में पेज नं. 129 में इन्होने बताया कि ''प्रीति का निवास अधिकतर स्त्रियों में होता है, संतान की जननी स्त्रियां ही है, धर्म स्त्रियों में ही होता है, स्त्रियों में लक्ष्मी की वास होता है, स्त्रियाँ शक्ति स्वरूपहै।

Table - 1

भारत की जनसंख्या प्रवृत्ति

Population Trends in India

Census Year	Population (In Crore)	Less/ Increase In Population	Density of Population	Literacy of Population	Birth Rate	Death Rate
1	2	3	4	5	6	7
1901	23.8	-	77	5.12	-	-
1911	25.2	+5.75	82	5.35	49.2	42.6
1921	25.1	-0.31	81	7.16	48.1	47.2
1931	27.9	+11.00	90	9.50	46.4	36.2
1941	31.9	+14.22	102	16.10	45.2	31.2
1951	36.1	+13.31	17	16.67	39.9	27.4
1961	43.9	+21.64	142	24.02	40.9	22.8
1971	54.8	+24.80	178	29.45	41.1	18.9
1981	68.3	+24.66	216	43.56	33.3	12.5
1991	84.6	+23.87	274	52.21	29.5	9.8
2001	102.7	+21.54	324	65.38	26.1	8.7
2011	121.02	+17.64	382	74.04	21.8	7.1

स्त्रोत : भारत की जनगणना 2011

1. तालिका क्रमांक 01 से स्पष्ट है कि भारत में 1901 में कुल जनसंख्या 23.8 करोड़ थी जो कि जनगणना 2011 में बढ़कर 121.02 करोड़ हो गया। उपरोक्त समयावधि (120 वर्षो में) लगभग 5 गुनी जनसंख्या में वृद्धि हुई है। जनसंख्या घनत्व वर्ष 1901 में 77 प्रति वर्ग कि.मी. थी जो कि जनगणना 2011 में बढ़कर 382 हो गया । लगभग 5 गुना वृद्धि हुई है।
2. 1901 में भारत में साक्षरता का प्रतिशत 5.12 प्रतिशत था जो कि 2011 में बढ़कर 74.04 प्रतिशत हो गया। उक्त समयावधि में लगभग 15 गुनी वृद्धि हुई है।
3. 1901 में भारत में जन्म दर 49.2 थी जो कि 2011 में घटकर 21.8 हो गया इससे लगभग 27.4 की कमी आयी। इसी प्रकार मृत्युदर में उपरोक्त समयावधि 1901 में 42.6 था जो कि घटकर 2011 में 7.1 हो गया।

उपरोक्त आंकड़ो के विष्लेषण से स्पष्ट है कि भारत में ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। शिक्षा व स्वास्थ्य का विकास, रोजगार के अवसर में वृद्धि महिलाओं के अधिकार में वृद्धि एवं जागरूकता आने के कारण जन्मदर एवं मृत्युदर में कमी हुई है किन्तु अब भी भारत में मृत्यु दर की अपेक्षा जन्म दर अधिक है जिसके कारण जनसंख्या में लगातार वृद्धि हो रही है।

Table - 2

भारत का लिंग अनुपात

Sex Ratio in India

Census Year	Sex Ratio
1	2
1901	972
1911	964
1921	955
1931	950
1941	945
1951	946
1961	941
1971	930
1981	934
1991	927
2001	933

2011	940

स्त्रोत : भारत की जनगणना 2011

तालिका क्रमांक 02 से स्पष्ट है कि भारत में 1901 में लिंगानुपात 972 था जो कि जनगणना 1991 में घटकर 927 हो गया किन्तु जनगणना 2001 एवं 2011 में कुछ सुधार होकर क्रमषः 933 एवं 940 हो गया । इसका कारण है कि सरकार द्वारा महिलाओं की षिखा व स्वास्थ्य पर विषेष जोर दिया गया तथा महिला सषक्तिकरण के माध्यम से समाज में जागरूकता के कारण लिंगानुपात में कुछ सुधार के संकेत है ।

Table -3
Religions Base Sex Population in India Data 2001

Religions	Sex Ratio
1	2
Hindu	931
Muslims	936
Christian	1009
Sikh	893
Buddhism	953
Jain	940

स्त्रोत : भारत की जनगणना 2011

तालिका क्रमांक 03 से स्पष्ट है कि जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार भारत में लिंगानुपात सबसे अधिक ईसाई धर्म में 1009 तथा सबसे कम सिक्ख धर्म में 893 रही है । जबकि जैन, मुस्लिम एवं हिन्दु धर्म में क्रमषः 940, 936 तथा 931 रही है।

Table - 4
State wise Sex Ratio of India Census - 2011

S.No.	Name of State	Sex Ratio (No. of Female on per Thousand Male)
01	02	03
1	Delhi	866
2	Hariyana	877
3	Jammu Kashmir	883
4	Sikkim	889
5	Punjab	893
6	Uttar Pradesh	908
7	Bihar	916
8	Gujrat	918
9	Arunachal Pradesh	920
10	Maharastra	925
11	Rajsthan	926
12	Madhya Pradesh	930
13	Nagaland	931
14	West Bangal	947
15	Jharkhand	947
16	Assam	954
17	Tripura	961
S.No.	Name of State	Sex Ratio (No. of Female on per Thousand Male)
18	Uttarakhand	963
19	Karnatka	968
20	Goa	968
21	Himanchal Pradesh	974
22	Mijoram	975
23	Orissa	978
24	Meghalayal	986
25	Manipur	987
26	Chhattisgarh	991
27	Andrapresh	992
28	Tamilnadu	995
29	Kerala	1084
30	India	940

स्त्रोत : भारत की जनगणना 2011

तालिका क्रमांक 04 से स्पष्ट है कि भारत में जनगणना 2011 के अनुसार सबसे कम लिंगानुपात राज्यों जिसमें दिल्ली 866, हरियाणा 877, जम्मू कश्मीर 883, सिक्किम 889, पंजाब 893, उत्तरप्रदेश 908, बिहार 916, गुजरात 918, है जबकि सबसे अधिक लिंगानुपात राज्यों जिसमें सबसे अधिक केरल 1084, तमिलनायडू 995, आंध्रप्रदेष 992, छत्तीसगढ़ 991, मणिपुर 987 ताकि मेघालय 978 है जबकि भारत का लिंगानुपात 940 है ।

उपरोक्त आंकड़ों से स्पष्ट है कि उत्तर पूर्व राज्यों में भारत में जहां महिला पुरूष में मतभेद, महिला उत्पीड़न, लड़की की अपेक्षा, लड़कों को अधिक प्राथमिकता देना, व्यवसायवाद, दहेजप्रथा, सामाजिक रीति–रिवाज में जटिलता भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति निम्न सोच आदि ऐसे कारण हे जिससे कारण इन राज्यों में लिंगानुपात राष्ट्रीय औसत से कम है ।

निष्कर्ष

1. भारत में लिंगानुपात में हुए परिवर्तनों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (वर्ष 1901 से 2011) किय गया है जिसमें प्रति हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या में गिरावट आयी हैं । भिन्न–भिन्न राज्यों में भी लिंगानुपात भिन्न–भिन्न है।
2. भारत में स्त्रियों की संख्या में लगातार गिरावट का कारण जिसमें – समाज में अशिक्षा, रूढ़िवादी प्रवृत्ति, स्त्री एवं बालिकाओं के साथ भेदभाव, पुरूषों को उच्च प्राथमिकता, गरीबी, बेरोजगारी, दहेजप्रथा, स्त्रियों के प्रति हीन मानसिकता, गृहकार्य तक सीमित, जागरूकता का अभाव एवं प्रवास आदि अनेक कारण है ।
3. भारत की लिंगानुपात 1901 में 972 था जो 1991 में कम होकर 927 हो गया । सरकार द्वारा षिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक जागरूकता व महिला सशक्तिकरण व प्रात्साहन के कारण समाज में महिलाओं का सामाजिक व आर्थिक विकास में वृद्धि हुई है जिसके कारण 2001 में 933 एवं 2011में 940 हो गया ।
4. दिल्ली राज्य में सबसे कम लिंगानुपात 866 है, छ.ग. में 991 तथा केरल राज्य में सबसे अधिक 1084 है ।

समस्याएं एवं परिणाम

1. भारत में जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई है, इसका कारण यह है कि समाज में अशिक्षा व स्थ्वास्थ्य स्तर कमजोर है, विशेषकर पिछड़े राज्यों की स्थिति बहुत खराब है।
2. समाज में रूढ़ीवाद, परम्परा, हीन मानसिकता, जातिवाद, साम्प्रदायिकता होने के कारण जनसंख्या वृद्धि पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है ।
3. गरीबी एवं बेरोजगारी समाज में व्याप्त है ।
4. भारत में लिंगानुपात कम होने का प्रमुख कारण यह है कि समाज में दहेज प्रथा महिलाओं के साथ सामाजिक

भेदभाव, हिसाग्रस्त, प्रसवपूर्व परीक्षण, भ्रूण हस्ता आदि कारण रही है।

5. विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का अभाव व निम्न स्वास्थ्य स्तर होने के कारण महिलाओं के विकास पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।
6. महिलाओं चारदीवारी तक गृह कार्य तक ही सीमित रहते है, घर के बाहर रोजगार के कम अवसर या प्रतिबंध किये जाने के कारण महिलाओं की सोच संकीर्ण हो रही है।
7. पूंजी का आभाव, होने के कारण उनकी आय व बचत निम्न होती है, जिसके कारण बीमारी अवस्था में उचित ढंग से इलाज नहीं हो पता और परिहार्य मृत्यु के शिकार हो जाते है।
8. समाज में महिलाओं को प्रोत्साहन की कमी है।
9. भारतीय समाज में महिलाओं एवं बालिकाओं के प्रति विचार या सोच संकीर्ण है।
10. स्माज में कुरितीयाँ, भ्रष्टाचार, शोषण, व्यवसायवाद, दूरदर्शन प्रभाव होने के कारण महिलाएं सर्वाधिक शोषण का शिकार हुए है।

सुझाव

1. भारत में जनसंख्या नियंत्रण करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों का विस्तार किया जावे।
2. भारत शहरी और विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का विस्तार करके शैक्षणिक स्तर को बढ़ाया जावे जिससे जनता में जागरूकता आ सके।
3. गरीबी एवं बेरोजगारी को दूर करने के लिए वृहद स्तर पर रोजगार कार्यक्रम चलाया जावे।
4. पिछड़े क्षेत्रों में आर्थिक विकास के लिये, बचत एवं पूंजी निर्माण को बढ़ावा दिया जावे जिससे कि उनकी प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो सके तथा बच्चों का लालन पालन ठीक से हो सके।
5. महिलाओं के प्रति सामाजिक भेदभाव को दूर किया जावे।
6. महिलाओं उत्पीड़न हेतु संवैधानिक नियमों के तहत् कठोर कार्यवाही किया जावे।
7. महिला सशक्तिकरण को और अधिक बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
8. महिलाओं का प्रसव पूर्ण परीक्षण पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जावे।
9. समाज में पुरूषों के समान स्त्रियों को भी आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु समान अवसर दिया जावें।
10. महिलाओं के लिये रोजगार के अनेक अवसर खोले जावें।
11. दहेज प्रथा, कुरूतियाँ, रूढ़ीवाद को समाप्त किया जावें।
12. भ्रूण हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जावें।
13. समाज में महिलाओं एवं बालिकाओं के प्रति सकारात्मक सोच होना चाहिए।

संदर्भ

1. Mamoria Dr. Chaturbhuj, (1985) “Commercial Geography” sahitya Bhavan Agra.
2. Tiwari, Vijay Kumar, (1996) “Geography of population in India”. Himalya publishing house Mumbai.
3. Mishra, S.K. and puri, V.K. (2002) “Indian Economy”, Himalya Publishing house Delhi.
4. Datt, Ruddar and sudharam, K.P.M., (2011-12) “Indian Economy”, Schand publishing Ram Nagar New Delhi.

Magazine

1. Pratiyogita darpan, census 2011 (2014) “Indian Economy”.